DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor
(Guest faculty)
Deptt. of Samskrit,
SRAP college, Bara
chakia, BRABU —
Muz. pur

B.A. (Hons.) Part — II
Subject — Samkrit
Paper — IV

# अभिज्ञानशाकुन्तलम् ~~(प्रथमोऽङ्कः)~~
(प्रथमोऽङ्कः)

## श्लोकों का अन्वय सहित हिन्दी-अनुवाद

श्लोक सं० — २०

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥
(अभिज्ञान० १/२०)

### अन्वयः

शैवलेन अपि अनुविद्धं सरसिजं रम्यं लक्ष्म मलिनमपि हिमांशोः लक्ष्मीं तनोति, वल्कलेनापि इयं तन्वी अधिकमनोज्ञा मधुराणामाकृतीनां किमिव हि न मण्डनम् ।

### अनुवाद

कमल का पुष्प शैवाल से घिरा हुआ भी अधिक शोभादायक होता है। जैसे चन्द्रमा का कलंक मलिन होते हुए भी चन्द्रमा की शोभा बढ़ाता ही है। इसी प्रकार यह ~~कोमला~~ कोमलाङ्गी बाला (शकुन्तला) भी इस वल्कल वस्त्र से अधिक मनोहारिणी प्रतीत होती है। ठीक ही है, सुन्दर एवं मनोहार आकृतिवालों के लिए कौन सी वस्तु शोभादायक नहीं होती।

———— ० ————

Scanned by TapScanner